भरत चक्रवर्ती

इस अवसर्पिणी काल में जब वर्तमान मानव सभ्यता का विकास हो रहा था तो प्रथम राजा हुए नाभिपुत्र ऋषभदेव। ऋषभदेव की दो रानियाँ थीं। बड़ी का नाम सुनन्दा और छोटी का नाम था सुमंगला। एक रात रानी सुमंगला ने कुछ स्वप्न देखे।

स्वप्न देखकर वह जाग गयी। सोचने लगी–

एक साथ इतने स्वप्न देखने का क्या अर्थ होगा?

प्रातःकाल उसने राजा ऋषभदेव से पूछा–

स्वामी ! मैंने एक ही रात में ये चौदह स्वप्न देखे हैं। इनका क्या फल हो सकता है?

ऋषभदेव ने कहा–

देवी, ऐसे स्वप्न या तो किसी तीर्थंकर की माता देखती है या चक्रवर्ती की। अवश्य ही तुम्हारा पुत्र इस काल का प्रथम चक्रवर्ती सम्राट् बनेगा।

समय पर सुमंगला ने एक पुत्र व एक पुत्री को जन्म दिया।

पुत्र तथा पुत्री का जन्मोत्सव मनाते हुए महाराज ऋषभदेव ने घोषित किया–

हमारे इस पुत्र को भरत और पुत्री को ब्राह्मी नाम से पुकारा जाय।

कुछ समय पश्चात् दूसरी रानी सुनन्दा ने भी एक युगल संतान को जन्म दिया। राजा ऋषभदेव ने पुत्र को गोद में लेकर सम्बोधित किया–

यह बालक बाहुबल में अद्वितीय होगा। अतः हम इसे बाहुबली कहेंगे।

और यह कन्या अद्भुत सुन्दरी है, अतः इसे सुन्दरी कहा जाय।

बड़ी रानी सुमंगला के क्रमशः अठानवे पुत्र और हुए।

कुछ बड़े होने पर एक बार सभी राजकुमार उद्यान में क्रीड़ा कर रहे थे कि बाहुबली की कन्दुक भरत ने ले ली। बाहुबली ने कहा–

भैया ! मेरी कन्दुक मुझे दे दो।

नहीं ! मैं बड़ा हूँ। यह मेरे पास ही रहेगी।

सभी छोटे राजकुमार भी बोले–
कन्दुक बड़े भैया के पास ही रहनी चाहिए। आखिर वे बड़े भाई हैं।
खेल में बड़े-छोटे का प्रश्न ही क्या? जिसमें ताकत होगी वही कन्दुक रखेगा।

भरत को भी जोश आ गया।
अपनी शक्ति का घमण्ड दिखाता है तू। चल हो जाय द्वंद्व युद्ध।
ठीक है।

एक तरफ बाहुबली अकेला तो दूसरी तरफ निन्यानवे भाई। बाहुबली ने एक-एक करके सभी भाइयों को पछाड़ दिया।

अन्त में भरत और बाहुबली में कुश्ती हुई तो भरत को उसने एक ही झटके में आकाश में उछाल दिया। भरत जब नीचे गिरने लगा तो बाहुबली ने उसे गेंद की तरह अधर में ही झेल लिया।

इस तरह भरत को भी द्वंद्व युद्ध में परास्त कर दिया।

फिर बाहुबली ने कन्दुक उठाकर भरत को वापस देते हुए कहा–
आप बड़े हैं इसलिए मैं अपनी जीती हुई कन्दुक आपको भेंट करता हूँ।

भरत मन ही मन लज्जित हुआ। किन्तु उसे अपने छोटे भाई के पराक्रम पर हर्ष भी हुआ।